पत्रिका

**दशहरा मेले का समापन समारोह : भारतीय कला संस्थान डीग के कलाकारों ने दी महारास की अद्भुत प्रस्तुति**

# रास रचावे नंदलाला.. आज बिरज में होरी रे रसिया..

पत्रिका कोटा का वैभव दशहरा मेला

## वृंदावन बिहारी लाल की लीलाएं देख मंत्रमुग्ध हुए दर्शक

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

**कोटा.** दशहरा मेले का समापन समारोह श्रीराधा-कृष्ण की रास लीलाओं का अनुपम गवाह बना। भारतीय कला संस्थान डीग के कलाकारों की अप्रतिम प्रस्तुति ने पूरे मेला परिसर को 'महारास' के रंग में रंग दिया। दशहरा मैदान में बृज जीवंत हो उठा। भक्ति और प्रेम से सराबोर महाराज ने भक्तों को बृज चौरासी की ऐसी अद्भुत यात्रा करवाई कि हर कोई राधा कृष्ण के दिव्य प्रेम में डूब गया। आत्मा को स्पर्श करने वाला अनुभव देने वाले महारास के जरिए श्रीकृष्ण के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व को बखूबी प्रकट किया। श्रीकृष्ण की लीलाओं के इस अद्भुत प्रदर्शन ने उनके रास के विविध स्वरूपों मयूर महारास, डांडिया महारास और होली महारास मनोहारी रंग में रंग दिया। होली महारास में कृष्ण ने राधा और उनकी सखियों के साथ फूलों की होली खेल प्रेम की अद्भुत छटा बिखेर दी। कृष्ण की 16 कलाओं की झलक मयूर महाराज में देखने को मिली। वहीं डांडिया महारास दर्शकों को उनके अद्वितीय व्यक्तित्व और शक्ति की ओर ले गया।

श्रीराधा कृष्ण लीला का जीवंत प्रदर्शन देख हर कोई उनके प्रेम और भक्ति में डूब गया। इस दौरान चला चलिए, जहां बसे बृजराज... के जरिए मयूर महारास ने तो जैसे समय के प्रवाह को रोक कर सभी को उस दिव्य क्षण का साक्षी बना दिया। रास रचावे नंदलाला... आज बिरज में होरी रे रसिया... बृजनार बन आयो कन्हैया... सरीखे भजनों पर श्री कृष्ण और राधे रानी के नृत्य ने हर किसी को भाव-विभोर कर दिया।

विजयश्री रंगमंच पर जब तक महारास का दिव्य आयोजन चलता रहा दर्शक जहां के तहां जमे रहे।

अपलक किशोरी श्यामा जूं और बिहारीजी के पावन लीलाओं में ही डूबे रहे। करीब एक घंटे तक चले महारास ने महसूस ही नहीं होने दिया कि दर्शक कोटा में बैठे हैं या बृज चौरासी की परिक्रमा में डूबे हैं।

### एक शाम पुराने गीतों के नाम आज

राष्ट्रीय दशहरा मेला में मंगलवार शाम 7 बजे से विजयश्री रंगमंच पर एक शाम पुराने गीतों के नाम कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जिसमें शहर के प्रबुद्धजन सदाबहार गीतों से सुरीली शाम सजाएंगे। मेला समिति अध्यक्ष विवेक राजवंशी ने बताया कि मेला अवधि एक दिन बढ़ाने के निर्णय के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम कराने का भी निर्णय लिया गया है।

विस्तृत खबर पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें

## कदी आओ नी रसीले म्हारे देश...

### राजस्थानी लोकगीतों से सजी सुरीली शाम

### जस्सू खान मांगणियार ने दिखाई खड़ताल की जादूगरी

**कोटा @ पत्रिका.** 131वां राष्ट्रीय दशहरा मेला की आखिरी सांझ राजस्थानी लोक रंगों में ऐसी रंगी कि देशी ही नहीं विदेशी पावणे भी सतरंगी रंग में रंग गए। दशहरा मेले के समापन अवसर पर राजस्थानी लोक गायक जस्सू खान मांगणियार और उनके साथियों की सुरीली गायकी से महक उठी।

जस्सू ने स्वागत गीत "केसरिया बालम पधारो म्हारे देश...,कदी आओ नी रसीले म्हारे देश..के साथ सुरों का ऐसा रंग बिखेरा कि हर कोई निहाल हो गया। इसके बाद उन्होंने घूमर तो कभी बन्ना जीमो तो हलुआ है बादाम रो सा की तान छेड़ सभी को झूमने के लिए मजबूर कर दिया। उन्होंने आफरीन-आफरीन...हुस्न ए जाना की तारीफ मुमकिन नहीं...सुनाया तो विजयश्री रंगमंच तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। जस्सू खान झिर्मर बरसे मेव..., निवुड़ा..., "दमा दम मस्तकलंदर... जैसे गीत प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। उन्होंने जैसे ही छाप तिलक सब छीनी तैसे नैना मिलाय के" सुनाए हर कोई झूम उठा। दमादम मस्त कलंदर पर तो विदेशी पाँवणे भी खूब थिरके। आखिर में जब "राम आएंगे तो अंगना सजाऊंगी" सुना पूरा माहौल ही भक्ति के रंग में रंग डाला। जोगिंदर सिंह की खड़ताल और इकतारे की जुगलबंदी ने भी सबका खूब मन मोहा। जस्सू खान का साथ गायन में सत्तार सिंह और स्वरुप सिंह ने दिया। वहीं संगतकारों में ढोलक पर निहाल खान ने, हारमोनियम पर स्वरुप खान ने, ढफली पर रहीश खान ने साथ दिया।

### डेजर्ट सिम्फनी ने किया रोमांचित

समारोह में जस्सू खां ने खड़ताल की जादूगरी दिखाते हुए पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ जुगलबंदी से कार्यक्रम को नई ऊंचाइयां दी। उनके दल में मौजूद कलाकारों ने ढोलक, ढोल, मोरचंग, कमायचा, सिंधी सारंगी, अलगोजा, भपंग, झांझ, हरमोनियम शानदार जुगलबंदी कर डेजर्ट सिम्फनी की शानदार प्रस्तुति दी। इस दौरान पर्यटन विभाग के विकास पांड्या, संदीप श्रीवास्तव, व्यापार महासंघ के महासचिव अशोक माहेश्वरी, मेला समिति अध्यक्ष विवेक राजवंशी ने कार्यक्रम की शुरुआत की। इटली मूल की फिल्म "सफेदा" के कलाकार और पर्यटक समेत बड़ी संख्या में दर्शक मौजूद रहे।

**131वें कोटा दशहरा मेले का रंगारंग समापन**

# लोक संस्कृति की बिखरी छठा, आतिशबाजी ने मोहा मन

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

**कोटा.** मनोहारी लोक संस्कृति की अनुपम छठा के बीच सोमवार को 131वें राष्ट्रीय दशहरा मेला का रंगारंग समापन हुआ। समापन समारोह की शुरुआत जस्सू खान मांगणियार के लोक गीतों से हुई। उनकी खनकती आवाज ने श्रोताओं के कानों में मिश्री घोल दी। लोक गीतों के बाद मेले में लोक संस्कृति की अनुपम छठा बिखरी। आखिर में दशहरा मैदान के साथ कोटा का आसमान भी खुशियों के रंग में रंग गया। घंटेभर से भी ज्यादा चली आतिशबाजी से पूरा दशहरा मैदान रंग-बिरंगी रोशनी से रोशन हो गया। मेला आयोजन में जुटे अधिकारियों, कर्मचारियों, संवेदकों को पुरस्कृत किया।

समापन अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने वीडियो संदेश के जरिए दशहरा मेला के सफल आयोजन के लिए मेला समिति और नगर के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि यह मेला नवाचारों के लिए हमेशा याद रखा जाएगा। उन्होंने दशहरा मैदान में मौजूद सभी लोगों को संकल्प दिलवाया कि वह दिवाली के अवसर पर घर, गली और मोहल्ला ही नहीं अपने आसपास के क्षेत्र को भी स्वच्छ बनाने में जी जान से जुट जाएं। युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि युवा छोटी-छोटी टोली बनाकर अपने आसपास स्वच्छता की अलख जगाएं। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर और विधायक संदीप शर्मा ने कहा कि नवाचारों के साथ साथ व्यापारियों और दर्शकों की सुविधाओं का बेहद अच्छे से ध्यान रखा गया।

मेला समिति अध्यक्ष विवेक राजवंशी ने समापन करते हुए मेले को सफल बनाने वाले सभी लोगों का आभार जताया। उन्होंने कहा कि पिछले मेले में 200 दुकानें खाली रह गई थीं, लेकिन इस बार इनके लिए अतिरिक्त इंतजाम करने पड़े। उन्होंने बताया कि मेले ने पिछले सालों से करीब 70-75 लाख रुपए अधिक के साथ साढ़े पांच करोड़ रुपए की आय अर्जित की है।

विस्तृत खबर पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें